Mithhi Eid Aur Mithhi Baaten (Hindi)

(हफ़्तावार रिसाला : 193
Weekly Booklet : 193)

मीठी ईद और मीठी बातें

सफ़हात 18

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"मीठी ईद और मीठी बातें"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स़ = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. **98987 32611** • E-mail :hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मीठी ईद और मीठी बातें

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला : **"मीठी ईद और मीठी बातें"** पढ़ या सुन ले, उसे दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़क़ीक़ी ईद नसीब फ़रमा, मरते वक़्त उस का ईमान सलामत रहे और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के अब्बूजान ह़ज़रते समुरह सुवाई رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه रिवायत फ़रमाते हैं कि हम नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह ! अल्लाह** पाक की बारगाह में सब से अच्छा अ़मल कौन सा है ? तो मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सच बोलना और अमानत अदा करना।" मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कुछ मज़ीद इर्शाद फ़रमाइये ! फ़रमाया : "ज़िक्र की कसरत और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना कि येह अ़मल फ़क़्र (ग़ुर्बत) को दूर करता है।" (القول البدیع، ص273 مختصرا)

बहरे रफ़्ए मरज़ो ज़ह़मतो रन्जो कुल्फ़त ढूंडते फिरते हैं वोह लोग कहां का ता'वीज़
तुम पढ़ो साह़िबे लौलाक पे कसरत से दुरूद है अ़जब दर्दे निहां और अमां का ता'वीज़

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी

बहरे रफ़्अ़ : दूर करने के लिये। **ज़ह़मत :** तक्लीफ़। **रन्ज :** ग़म। **कुल्फ़त :** तंगी, परेशानी। **दर्दे निहां :** छुपे दर्द।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ईद की ख़ुशियां दोबाला हो गईं

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सिरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ (बतौरे आ़जिज़ी) फ़रमाते हैं कि मैं दिल की सख़्ती के मरज़ में मुब्तला था लेकिन ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की दुआ़ की बरकत से मुझे छुटकारा मिल गया। हुवा यूं कि मैं एक बार नमाज़े ईद पढ़ने के बा'द वापस लौट रहा था तो ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को देखा। आप के साथ एक बच्चा भी था जिस के बाल बिखरे हुए थे और वोह टूटे दिल के साथ रो रहा था। मैं ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! क्या हुवा ? आप के साथ येह बच्चा क्यूं रो रहा है ? आप ने जवाब दिया : मैं ने चन्द बच्चों को खेलते हुए देखा जब कि येह बच्चा ग़मगीन ह़ालत में एक त़रफ़ खड़ा था और उन बच्चों के साथ नहीं खेल रहा था। मेरे पूछने पर इस ने बताया कि मैं यतीम (Orphan) हूं, मेरे अब्बूजान इन्तिक़ाल कर गए हैं, उन के बा'द मेरा कोई सहारा नहीं और मेरे पास कुछ रक़म भी नहीं कि जिस के बदले अख़रोट ख़रीद कर इन बच्चों के साथ खेल सकूं। चुनान्चे मैं इस बच्चे को अपने साथ ले अया ताकि इस के लिये गुठलियां (Endocarps) जम्अ़ करूं जिन से अख़रोट ख़रीद कर येह दूसरे बच्चों के साथ खेल सके। मैं ने अ़र्ज़ की : आप येह बच्चा मुझे दे दें ताकि मैं इस की येह ख़राब ह़ालत बदल सकूं। आप ने फ़रमाया : क्या तुम वाक़ेई ऐसा करोगे ? मैं ने कहा : जी हां। फ़रमाया : चलो इसे ले लो, **अल्लाह** पाक तुम्हारा दिल ईमान की बरकत से ग़नी करे और अपने रास्ते की ज़ाहिरी व बात़िनी पहचान अ़त़ा फ़रमाए। ह़ज़रते सिरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं उस बच्चे को ले कर बाज़ार गया, उसे अच्छे कपड़े पहनाए और अख़रोट ख़रीद कर दिये

जिन से वोह दिन भर बच्चों के साथ खेलता रहा। बच्चों ने उस से पूछा कि तुझ पर येह एह्सान किस ने किया ? उस ने जवाब दिया : ह़ज़रते सिरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने। जब बच्चे खेलकूद के बा'द चले गए तो वोह ख़ुशी ख़ुशी मेरे पास आया। मैं ने उस से पूछा : बताओ ! तुम्हारा ईद का दिन कैसा गुज़रा ? उस ने कहा : ऐ चचा ! आप ने मुझे अच्छे कपड़े पहनाए, मुझे ख़ुश कर के बच्चों के साथ खेलने के लिये भेजा, मेरे ग़मगीन और टूटे हुए दिल को जोड़ा, **अल्लाह** करीम आप को अपनी बारगाह से इस का बदला अ़ता फ़रमाए और आप के लिये अपनी बारगाह का रास्ता खोल दे। ह़ज़रते सिरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे बच्चे के इस कलाम से बेह़द ख़ुशी हुई और इस से मेरी ईद की ख़ुशियां मज़ीद बढ़ गईं। (الروض الفائق، ص185)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक यतीम बच्चे से हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत आप ने पढ़ी। ईदुल फ़ित्र की ख़ुशियां हैं, ख़ूब ने'मतों की कसरत है, घर में खाने के लिये एक से एक लज़ीज़ डिश तय्यार हो रही है, बेहतरीन उ़म्दा लिबास पहने हुए हैं, घर में मेहमानों का आना जाना और ईदियां लेने देने का सिल्सिला जारी है, ऐसे में क्या ही अच्छा हो कि पड़ोसियों, ग़रीबों, यतीमों और सफ़ेद पोश आ़शिक़ाने रसूल के घरों में भी ख़ुशी व राह़त पहुंचाने की कोई सूरत हो जाए ताकि येह "ईद" हमारे लिये "सईद" या'नी सआ़दत मन्दी का सबब बन जाए। काश ! ऐसा हो जाए।

यतीम किसे कहते हैं ?

ना बालिग़ बच्चा या बच्ची जिस का बाप फ़ौत हो गया हो वोह **"यतीम"** है। (در مختار، 10/416) बच्चा या बच्ची उस वक़्त तक यतीम रहते हैं जब तक बालिग़ न हों, जूंही बालिग़ हुए तो अब यतीम न रहे जैसा कि ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बालिग़ हो कर बच्चा यतीम नहीं रहता। इन्सान का वोह बच्चा यतीम है जिस का बाप फ़ौत हो गया हो, जानवर का वोह बच्चा यतीम है जिस की मां मर जाए, मोती वोह यतीम है जो सीप में अकेला हो उसे **"दुर्रे यतीम"** कहते हैं बड़ा क़ीमती होता है। (नूरुल इरफ़ान, पारह : 4, अन्निसाअ, तहूतल आयह : 2)

यतीम के सर पर हाथ फेरने की फ़ज़ीलत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यतीमों के साथ हुस्ने सुलूक का बड़ा अज्रो सवाब है। **अल्लाह** पाक के प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जिस ने सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये यतीम के सर पर हाथ फेरा तो जितने बालों पर उस का हाथ गुज़रा हर बाल के बदले उसे नेकियां मिलेंगी। (مسند امام احمد، 8/272، حدیث:22215)

यतीम के सर पर हाथ फेरने और मिस्कीन को खाना खिलाने की एक बरकत येह भी है कि इस से दिल की सख़्ती दूर हो जाती है। चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स ने अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : यतीम के सर पर हाथ फेरो और मिस्कीन को खाना खिलाओ।

(مسند امام احمد، 3/335، حدیث:9028)

बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लड़का यतीम हो तो उस के सर पर हाथ फेरने में आगे की त़रफ़ ले आए और

बच्चे का बाप (ज़िन्दा) हो तो हाथ फेरने में गरदन की त़रफ़ ले जाए।

(معجم اوسط، 1/351، حدیث:1279)

वज़ाह़त : या'नी बच्चा यतीम हो तो सर के ऊपर से पेशानी की त़रफ़ हाथ फेरो और उस का बाप हो तो पेशानी से गुद्दी की त़रफ़ फेरो।

(النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر، 4/280)

ज़ईफ़ों बे कसों आफ़त नसीबों को मुबारक हो

यतीमों को ग़ुलामों को ग़रीबों को मुबारक हो

यतीम बच्ची की ईमान अफ़रोज़ नसीह़तें

ह़ज़रते ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा सर्दियों के मौसिम में मूस्लाधार बारिश हुई, मुसल्सल बारिश की वज्ह से लोगों को परेशानी होने लगी। हमारे पड़ोस में एक इ़बादत गुज़ार औ़रत अपनी यतीम बच्चियों के साथ एक पुराने से घर में रहती थी। बारिश की वज्ह से उन के कच्चे घर की छत टपक्ने लगी और पानी घर में आने लगा। उस नेक औ़रत ने जब देखा कि सर्दी की वज्ह से बच्चे ठिठर रहे हैं और बारिश का पानी मुसल्सल घर में गिर रहा है जब कि बारिश रुकने का नाम तक नहीं ले रही तो उस ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठाए और अ़र्ज़ करने लगी : "ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर्दगार ! तू रह़्म और नरमी फ़रमाने वाला है, हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म और नरमी फ़रमा।" वोह नेक औ़रत अभी दुआ़ से फ़ारिग़ भी न होने पाई थी कि फ़ौरन बारिश रुक गई। मेरा घर उस नेक औ़रत के घर से बिल्कुल मिला हुवा था और मैं उस की दुआ़ सुन रहा था। जब मैं ने देखा कि उस की दुआ़ से बारिश बन्द हो गई है तो मैं ने एक थैली में सोने की दस अश्रफ़ियां डालीं और उस औ़रत के दरवाज़े पर पहुंच कर दस्तक दी। दस्तक सुन कर औ़रत ने कहा :

अल्लाह करे कि आने वाला ह़म्माद बिन सलमा हो। जब मैं ने येह सुना तो कहा कि मैं ह़म्माद बिन सलमा ही हूं, मैं ने तुम्हारी आवाज़ सुनी कि तुम दुआ़ में इस त़रह़ कह रही थीं : ऐ नरमी फ़रमाने वाले परवर्दगार ! नरमी फ़रमा। तो बताओ कि **अल्लाह** पाक ने तुम से नरमी वाला क्या मुआ़मला फ़रमाया ? वोह नेक औ़रत बोली : मेरे परवर्दगार ने हम पर इस त़रह़ नरमी फ़रमाई कि बारिश को रोक दिया, बच्चों को (सर्दी से बचा कर) गर्मी पहुंचाई और घर में जम्अ़ होने वाले पानी को ख़ुश्क कर दिया। येह सुन कर मैं ने सोने की अश्रफ़ियों वाली थैली निकाली और कहा : येह कुछ रक़म है, इसे तुम अपनी ज़रूरिय्यात में इस्ति'माल करो। अभी हमारे दरमियान येह गुफ़्तगू हो ही रही थी कि अचानक एक बच्ची हमारे पास आई। उस ने ऊन का पुराना सा कुरता पहना हुवा था जो एक जगह से फटा हुवा था और उस पर पैवन्द (Patches) लगे हुए थे। हमारे पास आ कर वोह कहने लगी : ऐ ह़म्माद बिन सलमा ! क्या आप येह दुन्या की दौलत दे कर हमारे और हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक के दरमियान पर्दा ह़ाइल (या'नी रुकावट पैदा) करना चाहते हैं, हमें ऐसी दौलत नहीं चाहिये जो हमें हमारे प्यारे रब की बारगाह से जुदा करने का सबब बने। फिर उस ने अपनी मां से कहा : ऐ अम्मीजान ! जब हम ने **अल्लाह** पाक से अपनी मुसीबतों की इल्तिजा की तो उस ने फ़ौरन ही दुन्या की दौलत हमारी त़रफ़ भिजवा दी, कहीं ऐसा न हो कि हम इस दौलत की वज्ह से अपने मालिके ह़क़ीक़ी के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाएं और हमारी तवज्जोह उस से हट कर किसी और की त़रफ़ हो जाए। फिर उस लड़की ने अपना चेहरा ज़मीन पर मलना शुरूअ़ कर दिया और कहने लगी : ऐ हमारे पाक परवर्दगार ! हमें तेरी

इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! हम कभी भी तेरे दर से नहीं जाएंगे, हमारी उम्मीदें सिर्फ़ तुझ से ही वाबस्ता रहेंगी, हम तेरे ही दर पर पड़े रहेंगे अगर्चे हमें धुत्कार दिया जाए लेकिन हम फिर भी तेरे दर को नहीं छोड़ेंगे । फिर उस बच्ची ने मुझ से कहा : **अल्लाह** पाक आप को अपनी हिफ़्ज़ो अमान में रखे, बराहे करम ! आप येह रक़म वापस ले जाएं और जहां से लाए हैं वहीं रख दें । हमें इस दौलत की कोई ज़रूरत नहीं, हमें हमारा पालने वाला ख़ुदाए पाक काफ़ी है । वोह हमें कभी भी मायूस नहीं करेगा । हम अपनी तमाम ज़रूरतें उस पाक परवर्दगार की बारगाह में पेश करते हैं, वोही हमारी ज़रूरतों को पूरा करने वाला है, वोही तमाम जहानों का पालने वाला और सारी मख़्लूक़ का हाकिमो वाली है । (عُیون الحکایات، ص181 ملخصاً وبتغیر)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तुम्हारे दर तुम्हारे आस्तां से मैं कहां जाऊं
न मुझ सा कोई बेकस है न तुम सा कोई वाली है

(ज़ौक़े ना'त, स. 233)

जन्नत में ले जाने वाला काम

जन्नती इब्ने जन्नती, सहाबी इब्ने सहाबी, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी यतीम को अपने खाने पीने में शामिल करे, तो **अल्लाह** पाक उस के लिये यक़ीनी तौ़र पर जन्नत लाज़िम फ़रमा देता है मगर येह कि कोई ऐसा गुनाह करे जो ना क़ाबिले बख़्शिश हो । (مشکاۃ المصابیح، 2/214، حدیث:4975)

एक और हदीसे पाक में है कि **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो

अपने पास रहने वाले यतीम लड़के या यतीम लड़की से भलाई करे तो मैं और वोह जन्नत में इन की त़रह़ होंगे। और अपनी दो उंग्लियां मिलाईं।

(مسند امام احمد، 8/300، حدیث:22347)

या'नी जैसे इन दोनों उंग्लियों में कोई फ़ासिला नहीं ऐसे ही क़ियामत में मुझ में और उस में कोई फ़ासिला और दूरी न होगी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/548)

पांच बच्चे और ट्रेन का सफ़र

ट्रेन में एक ग़मज़दा शख़्स, अपनी बहन और उस के पांच बच्चों के साथ सफ़र कर रहा था। वोह ख़ुद तो ट्रेन की खिड़की के पास बैठा किसी गहरी सोच में गुम था और वक़्फ़े वक़्फ़े से बहन की हलकी हलकी सिस्कियों की आवाज़ सुन कर चुपके से उसे तसल्ली दे देता, जब कि बच्चे पूरे डिब्बे (बोगी) में ऊधम बाज़ी करने में मसरूफ़ थे। कोई इधर भागता तो कोई उधर, कोई बर्थ पर चढ़ता तो कोई छलांगें लगाता अल ग़रज़ ट्रेन का डिब्बा खेल के मैदान का मन्ज़र पेश कर रहा था, दूसरे मुसाफ़िर बच्चे की इन ह़रकतों से बड़े परेशान हो रहे थे, इतने में एक शख़्स को ग़ुस्सा आ गया और वोह उस ग़मज़दा शख़्स को बच्चों का बाप समझते हुए उस के पास आ कर कहने लगा : जनाब ! अपने बच्चों को संभालें, येह ट्रेन है या कोई बच्चों का प्ले ग्राउन्ड ? कोई इधर भाग रहा है तो कोई उधर। **अल्लाह** न करे ! चलती ट्रेन से कोई गिर गया तो ? आप तो सोचों में ऐसे गुम हैं जैसे पता नहीं क्या हो गया है ? ग़मज़दा शख़्स का बन्द टूटा और वोह लड़खड़ाती हुई ज़बान में बोला : भाई ! येह मेरे बच्चे नहीं बल्कि मेरे भान्जे हैं, आज सुब्ह़ इन बच्चों के अब्बू फ़ौत हो गए हैं और हम जनाज़े में जा रह हैं, अभी

इन बच्चों को पता नहीं है कि इन का बाप हमेशा के लिये इन्हें छोड़ कर जा चुका है। आप बताइये मैं किस त़रह़ इन खिलती कलियों को येह दर्दनाक ख़बर सुनाऊं ? मुझ में तो इन बच्चों को रोकने की हिम्मत नहीं है। येह सुनना था कि उस शख़्स समेत सभी मुसाफ़िरों का गुस्सा बच्चों से हमदर्दी व महब्बत में बदल गया और अब सब मुसाफ़िर बड़ी हमदर्दी और शफ़्क़त भरी नज़रों से उन बच्चों की त़रफ़ देख रहे थे।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह अगर्चे फ़र्ज़ी वाक़िआ़ ही सही लेकिन हमें बहुत कुछ सिखा रहा है। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! हमारे मुआ़शरे में ऐसे अफ़राद भी पाए जाते हैं जो ग़रीबों, यतीमों, दुख दर्द के मारों, बे सहारों और सफ़ेद पोश अफ़राद के साथ हमदर्दी करते और उन के दुख सुख में काम आते हैं जो कि एक बहुत बड़ी नेकी है। किसी मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना वैसे ही सवाब का काम है और अगर वोह कोई ग़रीब या यतीम हो तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेने से सवाब और भी बढ़ सकता है। अफ़्सोस ! आज ह़ालात बहुत बदल गए हैं, अब ग़रीबों और यतीमों के साथ हमदर्दी व ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा कम होता दिखाई दे रहा है, घर के अत़राफ़ में मौजूद ज़रूरत मन्दों और सफ़ेद पोश लोगों के साथ कम ही लोग तआ़वुन करते हैं। ईद का मौक़अ़ हो या घर में ख़ुशी की तक़रीब, बच्चे की शादी हो या रिश्तेदारों के लिये इफ़्त़ारी का प्रोग्राम, अगर किसी ने तवज्जोह दिला दी तो बचा हुवा खाना किसी ग़रीब को दे दिया जाता है वरना ख़ुशियों के मौक़अ़ पर इन ग़रीबों की याद न होने के बराबर है। क्या आप जानते हैं कि अच्छा घर और बुरा घर कौन सा है ? आइये इस बारे में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये।

मुसल्मानों के बेहतरीन घर

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मानों में बेहतरीन घर वोह घर है जिस में यतीम हो जिस से अच्छा सुलूक किया जाता हो और मुसल्मानों में बद तरीन घर वोह घर है जिस में यतीम हो जिस से बुरा सुलूक किया जाता हो।

(ابن ماجہ، 4/193، حدیث:3679)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यतीम से (हुस्ने) सुलूक की बहुत सूरतें हैं : उस की परवरिश, उस के खाने पीने का इन्तिज़ाम, उस की ता'लीमो तरबियत, उसे दीनदार नमाज़ी बनाना सब ही इस में दाख़िल है। ग़रज़ कि जो सुलूक अपने बच्चे से किया जाता है वोह यतीम से किया जाए येह कलिमा बहुत ही जामेअ़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/562)

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस दस्तर ख़्वान (Dining Mat) पर यतीम होता है शैत़ान उस दस्तर ख़्वान के क़रीब नहीं जाता। (مجمع الزوائد، 8/293، حدیث:13512)

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! अब इस मुआ़शरे में ऐसे बद नसीब भी पाए जाते हैं जो यतीम बच्चे, बच्चियों से अच्छा सुलूक करने की बजाए इन पर ज़ुल्मो सितम करते, इन का माल खा जाते, जाएदादें (Properties) हड़प कर जाते, और त़रह़ त़रह़ से इन मज़्लूमों को सताते, रुलाते और इन की बद दुआ़एं लेते हैं।

मुंह से आग निकल रही होगी

ह़ज़रते अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक एक क़ौम

को उन की क़ब्रों से इस हालत में उठाएगा कि उन के मुंह से भड़क्ती हुई आग निकल रही होगी। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने नहीं देखा **अल्लाह** करीम इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَ سَیَصْلَوْنَ سَعِیْرًا ﴿۱۰﴾ (پ4، النساء:10)

(مسند ابی یعلی، 6/272، حدیث:7403)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़क्ते धड़े (भड़क्ती आग) में जाएंगे।

ऐ ज़ालिमो ! ऐ यतीमों का माल हड़प करने वालो ! उन के प्लॉट्स (Plots) पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा करने वालो ! यतीम का माल दहक्ती हुई आग है, इस को निगलना गोया आग निगलना है। आज तो येह माल बड़ा अच्छा लग रहा है लेकिन एक दिन येह हलाकत का सबब बन जाएगा। आज तुम्हें अपनी ताक़त पर बड़ा नाज़ है मगर जब क़ियामत का दिन होगा उस वक़्त आप की एक नहीं चलेगी। **अल्लाह** पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब यतीम को रुलाया जाता है तो उस के रोने से अ़र्श कांप जाता है और **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : ऐ फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे को किस ने रुलाया जिस के बाप को सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया है। (فردوس الاخبار، 2/507، حدیث:8557)

ज़ालिमो ! बा'द मरने के पछताओगे याद रखो ! जहन्नम में तुम जाओगे

सर सब्ज़ और मीठा माल

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बिला शुबा येह माल सर सब्ज़ मीठा है और उस मुसल्मान का अच्छा साथी है जो इस में से मिस्कीन, यतीम और मुसाफ़िर को दिया करे और जो नाहक़ माल लेगा वोह

उस (जानवर) की तरह है जो खाता ख़ूब है मगर सेर नहीं होता और वोह माल क़ियामत के दिन उस के ख़िलाफ़ गवाही देगा। (بخاری، 2/266، حدیث:2842)

शहद और राख

एक मरतबा हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में शैतान को देखा जो एक हाथ में "शहद" और दूसरे में "राख" उठा कर जा रहा था, आप ने पूछा : ऐ दुश्मने ख़ुदा ! येह शहद और राख तेरे किस काम आती है ? बोला : शहद ग़ीबत करने वालों के होंटों पर लगाता हूं ताकि वोह इस गुनाह में और आगे बढ़ें और राख यतीमों के चेहरों पर मलता हूं ताकि लोग उन से नफ़रत करें। (مکاشفۃ القلوب ص66)

ऊंट के होंटों जैसे होंट

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मैं ने मे'राज की रात एक ऐसी क़ौम देखी जिन के होंट ऊंटों के होंटों की तरह थे और उन पर ऐसे लोग मुक़र्रर थे जो उन के होंटों को पकड़ते फिर उन के मूंहों में आग के पथ्थर डालते जो उन के पीछे से निकल जाते। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! येह कौन लोग हैं ? तो उन्हों ने बताया : येह वोह लोग हैं जो यतीमों का माल ज़ुल्म से खाते थे। (تفسیر قرطبی، النساء، تحت الآیۃ:10، 3/39، الجزء الخامس)

कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

वारिसों के माल में एहतियात की बेहतरीन मिसाल

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किसी क़रीबुल मर्ग शख़्स के पास मौजूद थे। रात में जिस वक़्त वोह फ़ौत हुवा तो उन्हों ने फ़रमाया : चराग़ बुझा दो कि अब इस के तेल में वुरसा का हक़ शामिल हो गया है।

(एहयाउल उ़लूम (मुतर्जम), 2/368)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! घर में अगर यतीम बच्चे हों तो उन के माल के मुआ़मले में बेहद एह़तियात़ से काम लेना चाहिये और हां ! यतीम बच्चे की इजाज़त से भी उस का माल ज़ाती इस्ति'माल में नहीं ले सकते, एक ही घर में रहने वाले चन्द भाइयों में से अगर कोई फ़ौत हो जाए तो ज्वाइन्ट फ़ेमिली में यतीम बच्चों के माल का ख़याल रखना बड़ा मुश्किल हो जाता है लेकिन येह एह़तियात़ करनी ही होगी और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ग़लत़ अन्दाज़ से यतीमों के माल को इस्ति'माल किया तो कल क़ियामत में दर्दनाक अ़ज़ाब हो सकता है जैसा कि ऊपर बयान की गई रिवायात में आप ने पढ़ा। क़ुरआने करीम में एक मक़ाम पर **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْیَتِیْمِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ حَتّٰى یَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَ اَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۴﴾

(پ15، بنی اسرائیل:34)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सब से भली है यहां तक कि वोह अपनी जवानी को पहुंचे और अ़ह्द पूरा करो बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है।

इस आयत में एक कबीरा गुनाह से मन्अ़ किया गया है और एक अहम चीज़ का हुक्म दिया गया है। कबीरा गुनाह तो यतीम के माल में ख़ियानत करना है और अहम चीज़ वा'दा पूरा करना है। यतीम का कुल या बा'ज़ माल ग़स्ब कर लेना, उस में ख़ियानत करना, उस के देने में बिला वज्ह टाल मटोल करना येह सब ह़राम है, चुनान्चे फ़रमाया कि यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर सिर्फ़ अच्छे त़रीक़े से और वोह येह है कि उस की हिफ़ाज़त करो और उस को बढ़ाओ। इस से मा'लूम हुवा कि यतीम का

वली (सर परस्त) यतीम के माल से तिजारत वग़ैरा कर सकता है, जिस से उस का माल बढ़े कि येह अह्सन (या'नी अच्छे त़रीक़े) में दाख़िल है और ऐसे ही उस का रुपिया सूद के बिग़ैर बैंक वग़ैरा में उस के नाम पर रखना जाइज़ है कि येह ह़िफ़ाज़त की क़िस्म है। दूसरा हुक्म यहां इर्शाद फ़रमाया कि यतीमों का माल उन के ह़वाले कर दो जब वोह यतीम अपनी पुख़्ता उ़म्र को पहुंच जाए और वोह अठ्ठारह साल की उ़म्र है।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, बनी इसराईल, तह़्तल आयह : 34, 5/459)

यतीम के माल की ह़िफ़ाज़त करने वाला क़ाज़ी

अबुल क़ासिम उ़बैदुल्लाह बिन सुलैमान कहते हैं कि मैं मूसा बिन बुग़ाअ का "कातिब" था, उस वक़्त हम "रै" (ईरान के दारुल हुकूमत जिस का नाम अब तेहरान है) में थे और वहां के क़ाज़ी ह़ज़रत अह़मद बिन बुदैल कूफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه थे। मूसा बिन बुग़ाअ की उस अ़लाक़े में कुछ ज़मीन थी, जिस में वोह ता'मीराती काम करवाना चाहता था। उस की जगह के बिल्कुल साथ ज़मीन का एक टुकड़ा एक यतीम बच्चे की मिल्किय्यत में था, मुझे मूसा बिन बुग़ाअ ने हुक्म दिया कि वहां जा कर ज़मीन वग़ैरा देखूं और मज़ीद ज़मीन ख़रीदनी पड़े तो ख़रीद लूं। मैं वहां पहुंचा और ज़मीन को देखा तो येही बात समझ आई कि जब तक उस यतीम की ज़मीन न ख़रीदी जाएगी उस वक़्त तक ता'मीराती काम ठीक अन्दाज़ में न होगा। चुनान्चे मैं वहां के क़ाज़ी ह़ज़रते अह़मद बिन बुदैल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास गया और अ़र्ज़ की : आप यतीम बच्चे की ज़मीन हमें बेच दें। क़ाज़ी साह़िब ने इन्कार करते हुए फ़रमाया : उस यतीम बच्चे को अपनी ज़मीन बेचने की अभी कोई ज़रूरत नहीं और मैं येह जुर्अत नहीं कर सकता कि ज़मीन बेच

कर उसे ज़मीन से महरूम कर दूं। हो सकता है मैं ज़मीन के बदले क़ीमत ले लूं और ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी तरह उस का माल हलाक हो जाए तो गोया मैं उस के हक़ को ज़ाएअ करने वाला हो जाऊंगा। मैं ने कहा : आप हमें वोह ज़मीन बेच दें हम उस की डबल क़ीमत अदा करेंगे। क़ाज़ी साहिब ने कहा : मैं डबल क़ीमत पर भी उस की ज़मीन नहीं बेचूंगा क्यूं कि माल तो घटता बढ़ता रहता है। ज़ियादा माल का लालच मुझे ज़मीन बेचने की तरफ़ माइल नहीं कर सकता। अल ग़रज़ मैं ने क़ाज़ी साहिब को हर तरह से राज़ी करने की कोशिश की लेकिन वोह नहीं माने और उन के सामने मेरी एक न चली। उन की बातों ने मुझे परेशान कर दिया। मैं ने तंग आ कर कहा : क़ाज़ी साहिब ! आप ऐसा क़दम न उठाइये जिस से आप को परेशानी हो, क्या आप जानते नहीं कि येह मूसा बिन बुग़ाअ का मुआमला है ? ज़रा सोच समझ कर क़दम उठाइये, ऐसे लोगों से टक्कर लेना दुरुस्त नहीं। क़ाज़ी साहिब ने कहा : **अल्लाह** पाक तुझे इज़्ज़त अता फ़रमाए, तू मेरे मुआमले में परेशान न हो, बेशक मेरा परवर्दगार इज़्ज़त वाला और बड़ी बुलन्दी वाला है। क़ाज़ी साहिब की येह बातें सुन कर मैं वापस पलट आया और **अल्लाह** पाक से हया करते हुए मैं दोबारा क़ाज़ी साहिब के पास न गया। जब मैं मूसा बिन बुग़ाअ के पास गया तो उस ने मुझ से पूछा : तुम्हें जिस काम के लिये भेजा था उस का क्या हुवा ? मैं ने क़ाज़ी साहिब से मुलाक़ात का सारा वाक़िआ बयान कर दिया और जब उसे क़ाज़ी साहिब का येह जुम्ला बताया कि "बेशक मेरा परवर्दगार बड़ी बुलन्दी व अज़मत वाला है।" तो येह सुनते ही मूसा बिन बुग़ाअ रोने लगा और बार बार इसी जुम्ले

को दोहराता रहा फिर मुझ से कहा : अब तुम उस ज़मीन को रहने दो और क़ाज़ी साहिब को तंग न करो. जाओ ! और उस नेक मर्द (या'नी क़ाज़ी साहिब) के हालात मा'लूम करो। अगर उसे किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मैं उसे पूरा करूंगा, ऐसे नेक लोग दुन्या में बहुत कम होते हैं। मैं मूसा बिन बुग़ाअ से रुख़्सत हो कर हज़रते अहमद बिन बुदैल कूफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास आया और कहा : क़ाज़ी साहिब ! मुबारक हो, अमीर मूसा बिन बुग़ाअ ने ज़मीन वाले मुआमले में आप को आफ़ियत बख़्शी और येह इस वज्ह से हुवा कि मैं ने वोह तमाम बातें जो हमारे दरमियान हुई थीं, तफ़्सीलन मूसा बिन बुग़ाअ को बता दीं। अब अमीर मूसा बिन बुग़ाअ ने येह हुक्म दिया है कि अगर आप को किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो हमें बताएं हम ज़रूर पूरा करेंगे। क़ाज़ी साहिब ने उसे दुआएं दी और फ़रमाया : येह सब इस का बदला है कि मैं ने एक यतीम के माल की हिफ़ाज़त की, मैं उस के बदले दुन्यवी मालो दौलत का तलब गार नहीं हुवा। (उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम), 1/396)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अमीरे अहले सुन्नत की एह़तियात़

दौरे ह़ाज़िर में इस्लामी दुन्या के अ़ज़ीम मुबल्लिग़ और इ़ल्मी व रूह़ानी पेशवा, अमीरे अहले सुन्नत मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه यतीमों के माल में एह़तियात़ के बारे में अपना एक वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : जिन दिनों बड़े भाई (मर्ह़ूम अ़ब्दुल ग़नी) का इन्तिक़ाल हुवा उन दिनों हम दोनों भाई मिल कर झाड़ू का

कारोबार करते थे और शायद मैं शहीद मस्जिद या नूर मस्जिद में इमामत भी कर रहा था। भाई के इन्तिक़ाल के बा'द ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर आई और तर्का (Inheritance) तक़्सीम करने का भी मस्अला हुवा क्यूं कि मेरे वालिदे मर्हूम का तर्का तक़्सीम नहीं हुवा था और उन के छोड़े हुए माल में ही कारोबार होता रहा लेकिन अब मैं सख़्त आज़्माइश में आ गया क्यूं कि अब हर चीज़ में भाई के पांच यतीम बच्चों और उन यतीमों की मां का ह़क़ शामिल हो गया था। उन दिनों मेरा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िरियों का मा'मूल था चुनान्चे मैं ने उन की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सारी सूरते ह़ाल पेश की और क्या करना है, कैसे करना है इस के मुतअ़ल्लिक़ फ़तवा ह़ासिल किया फिर एक छोटी सी छोटी चीज़ मसलन काग़ज़, क़लम और सूई तक का ह़िसाब किया जो कि एक दुश्वार काम था लेकिन जितना हो सका मैं ने कोशिश की और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तर्का तक़्सीम किया बल्कि अपनी त़रफ़ से कुछ ज़ाइद पेश किया ताकि मेरी त़रफ़ उन का कोई ह़क़ न रह जाए मगर फिर भी ख़ौफ़ आता था कि कहीं यतीमों के माल में मुझ से ह़क़ तलफ़ी न हो गई हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अब मेरे पांचों भतीजे बालिग़ हो चुके हैं, मैं ने उन से और (उन के ज़रीए) उन की अम्मीजान से (एह़तियात़न) मुआ़फ़ी ह़ासिल कर ली है।

(अमीरे अहले सुन्नत की कहानी उन्ही की ज़बानी, ग़ैर मत़्बूआ़)

सायए अ़र्श पाने का त़रीक़ा

ऐ ग़रीबों और यतीमों का दर्द रखने वाले इस्लामी भाइयो ! आइये येह अ़ह्द करें कि हम यतीमों के ह़ुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करेंगे, बे सहारा और

ग़रीब लोगों को ख़ुशियां फ़राहम करने का ज़रीआ़ बनेंगे। अपने इर्द गिर्द नज़र दौड़ाइये, अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों, महल्ले दारों वग़ैरा में अगर कोई यतीम बच्चा, बच्ची या ऐसी बेवा ख़ातून हो जिस का गुज़र बसर मुश्किल से हो रहा हो तो बिल ख़ुसूस इस मीठी ईद के ख़ुशी के मौक़अ़ पर और आ़म हालात में भी उन की कफ़ालत (Guardianship) की कोशिश फ़रमाइये, हर माह उन के घर राशन डलवा दीजिये, ईद के मौक़अ़ पर यतीम बच्चों को नए और ख़ूब सूरत कपड़े पहुंचा दें, ईदी के तौ़र पर कुछ मुनासिब रक़म बा इ़ज़्ज़त त़रीक़े से पेश कर के उन ग़रीबों, बे सहारों और दर्दमन्दों के दिल की दुआ़एं लीजिये। **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी यतीम या बेवा की कफ़ालत करे **अल्लाह** पाक उस को बरोज़े क़ियामत अ़र्श का साया अ़त़ा फ़रमाएगा। (مُعجم اوسط، 6/429، حدیث:9292)

अल्लाह पाक हम सब को अपनी राह में ख़र्च करने, ग़रीबों यतीमों के साथ अच्छा सुलूक करने और उन में ख़ुशियां बांटने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हज़रते अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूले करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ईदुल फ़ित्र के दिन (नमाज़े ईद के लिये) तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द खजूरें न खा लेते और आप ताक़ अदद में खजूरें तनावुल फ़रमाते

(بخاری، 1/328، حدیث:953)

978-969-722-166-0
01082181

فیضانِ مدینہ محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی، کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net